

प्लास्टिक: कल का खतरा, आज ही जागें

सुदिप्ता घोष

प्रशांत महासागर की गहराइयों में कैलिफोर्निया के तट से 800 किमी और जापान के तट से 300 किमी की दूरी पर एक ऐसी पट्टी है, जिसे आधुनिक सभ्यता का क्रूर प्रतीक माना जा सकता है। इसे 'द ग्रेट पैसिफिक गार्बेज पैच' (प्रशांत कचरा पट्टी) नाम दिया गया है। माना जाता है कि इसका आकार भारत से भी चार गुना बड़ा है। इसमें पूरा कूड़ा-करकट भरा हुआ है, जिसमें सबसे ज़्यादा प्लास्टिक का कचरा है। यह वह प्लास्टिक है जिसे हम इधर-उधर ज़मीन पर फेंक देते हैं। फिर यह हवा और बारिश के पानी से होता हुआ नालियों में जाता है। नालियों से नदियों और नदियों से महासागरों में पहुंच जाता है। यह फिर सागर की लहरों पर सवार होकर प्रशांत महासागर की इस पट्टी में जमा होता जाता है।

प्लास्टिक जिसे 20वीं सदी में चमत्कारिक पदार्थ की उपाधि से नवाजा गया था, अब हमारी आधुनिक सभ्यता के निष्ठुर चेहरे के रूप में उभर रहा है। इसके जैसा लचकदार पदार्थ प्रकृति में और कोई नहीं है। यह टिकाऊ है, वाटरप्रूफ है, बहुत हल्का व सस्ता है और सबसे बड़ी बात, इसे किसी भी आकार में ढाला जा सकता है। हर दिन इसमें नए-नए गुण जोड़े जा रहे हैं, जिससे प्लास्टिक की उपयोगिता और भी बढ़ती जा रही है। लेकिन प्लास्टिक के इन्हीं फायदों की वजह से अब यह सेहत और पर्यावरण के लिए घातक बनता जा रहा है। प्लास्टिक को प्रकृति में अपघटित (नष्ट) नहीं किया जा सकता। इसलिए अब तक हमने जो भी प्लास्टिक निर्मित किया है, उसका प्रत्येक अणु कहीं न कहीं पर्यावरण में मौजूद है और आने वाले सैकड़ों सालों तक यह वैसा ही रहेगा।

क्या है प्लास्टिक?

प्लास्टिक शब्द का सबसे पहले वाणिज्य पत्रिका 'प्लास्टिक्स' में वर्ष 1925 में किया गया था। इसकी उत्पत्ति ग्रीक के दो शब्दों 'प्लास्टिकोस' और 'प्लास्टोस'

से मानी जाती है। 'प्लास्टिकोस' का अर्थ है 'आकार देने या ढालने में समर्थ' और 'प्लास्टोस' का अर्थ है 'ढाला हुआ'। प्लास्टिक पॉलीमर्स होते हैं जो परमाणुओं या छोटे अणुओं की लंबी ज़ुखला से बने होते हैं। सभी प्लास्टिक अनिवार्य रूप से पॉलीमर्स होते हैं, लेकिन सभी पॉलीमर्स प्लास्टिक नहीं होते। प्लास्टिक मुख्यतः कार्बन और हाइड्रोजन से बने होते हैं जिसमें अन्य तत्व जैसे ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, क्लोरीन और फ्लोरीन भी शामिल हो सकते हैं। प्लास्टिक की अलग-अलग किस्मों के निर्माण के लिए इन तत्वों को अलग-अलग मात्रा और अलग-अलग क्रम में संयोजित किया जाता है।

मनचाहा आकार देकर उसे ठोस रूप में परिवर्तित किया जा सके, ऐसे पदार्थ की चाहत ने ही मनुष्य को प्रकृति में उपस्थित प्लास्टिक के इस्तेमाल के लिए प्रेरित किया। लेकिन बढ़ती मांग की पूर्ति यह प्राकृतिक प्लास्टिक नहीं कर पाया। तो कृत्रिम प्लास्टिक के निर्माण की ज़रूरत महसूस हुई। आज अधिकांश कृत्रिम प्लास्टिक का ही इस्तेमाल होता है जो कच्चे तेल, कोयले अथवा प्राकृतिक गैस से बनाया जाता है।

प्लास्टिक का इतिहास

पहली बार कृत्रिम प्लास्टिक अलेक्जेंडर पार्क्स ने वर्ष 1862 में सेल्यूलोस से बनाया था। उसे नाम दिया गया 'पार्कसाइन'। खराब गुणवत्ता के कारण व्यापक पैमाने पर इसके उत्पादन के प्रयास विफल रहे। जो शुरुआती प्लास्टिक बड़े पैमाने पर सफल हुआ, वह सेल्युलाइड था जिसका मतलब था 'सेल्यूलोज के समान'। जॉन वेसली हयात ने 1869 में कपास के तंतुओं और कपूर से कृत्रिम सेल्युलाइड बनाया था। मकसद हाथी दांत से बनने वाली बिलियर्ड बॉल का सस्ता विकल्प तैयार करना था। सेल्युलाइड ने सीमित मात्रा में उपलब्ध और काफी महंगे प्राकृतिक प्लास्टिक का विकल्प उपलब्ध कराया और इस तरह कई चीज़ों में प्लास्टिक

के इस्तेमाल की राह खुली। सेल्युलाइड का सबसे महत्वपूर्ण उपयोग फोटोग्राफिक फिल्म में किया गया। लेकिन सेल्युलाइड के अत्यधिक ज्वलनशील होने और इसके निर्माण में बहुत अधिक श्रम लगने के कारण इसका इस्तेमाल सीमित ही रहा।

पहली बार पूर्णरूपेण कृत्रिम प्लास्टिक का आविष्कार वर्ष 1907 में लियो बैकलैंड ने किया था। इसमें पौधों से निकाले गए सेल्युलोज का इस्तेमाल नहीं किया गया था। बैकलैंड एक ऐसे पदार्थ की तलाश में थे जिसका इस्तेमाल इलेक्ट्रिकल इंस्युलेटर के रूप में लाख के स्थान पर किया जा सके। इस प्लास्टिक को बेकेलाइट नाम दिया गया, जिसे कोलतार के सत्व से बनाया गया था। बेकेलाइट का इस्तेमाल घड़ियों, रेडियो, टेलीफोन बनाने में किया गया।

समय के साथ नए-नए तरह के प्लास्टिक आते गए। हर दशक में प्लास्टिक के नए अवतारों का और भी विशेषताओं के साथ पदार्पण हुआ, जैसे पॉलीविनाइल क्लोराइड (पीवीसी), पॉलीथिलीन, नायलॉन, पॉलीस्टायरीन, पॉलीथिलीन टैराथेलेट (पीईटी) आदि। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान प्लास्टिक की व्यापक मांग के चलते इसके उत्पादन में बड़ी तेजी से बढ़ोतरी हुई। प्लास्टिक उत्पादन की क्षमता में जो बढ़ोतरी हुई, उसके चलते युद्ध के बाद लोगों को प्लास्टिक से बनी सस्ती उपभोक्ता वस्तुएं अचानक उपलब्ध हो गईं।

प्लास्टिक के प्रकार

प्लास्टिक को मोटे तौर पर दो वर्गों में बांट सकते हैं - एक, थर्मोसेट प्लास्टिक और दूसरा, थर्मोप्लास्टिक। बेकेलाइट जैसे प्लास्टिक थर्मोसेट वर्ग में आते हैं जिन्हें केवल एक बार ही पिघलाकर मनचाहे आकार में ढाला जा सकता है। एक बार ठोस रूप धारण कर लेने के बाद इसे दुबारा से नहीं पिघलाया जा सकता। दूसरी ओर, थर्मोप्लास्टिक को कई बार पिघलाकर अलग-अलग रूपों में ढाला जा सकता है। इस विशेषता के कारण थर्मोप्लास्टिक को रिसाइकल करना संभव होता है। आज इस्तेमाल होने वाला अधिकांश प्लास्टिक थर्मोप्लास्टिक होता है।

जिन पॉलीमर से मिलकर प्लास्टिक बनता है, उसकी

संरचना के आधार पर ही उसकी विशेषताएं तय होती हैं। उसे नाम भी इसी आधार पर मिलता है। प्लास्टिक किन पॉलीमर से मिलकर बना है, इसका पता उन पर दिए 'रेज़िन आइडेंटिफिकेशन कोड' से लगाया जा सकता है। किसी भी प्लास्टिक कंटेनर के पेंदे पर गोल त्रिकोण के अंदर लिखी एक संख्या से पॉलीमर के कोड की पहचान आसानी से की जा सकती है। उदाहरण के लिए पानी की बोतलें पीईटी प्लास्टिक से बनी होती हैं और उनका रेज़िन कोड 1 होता है। सामान्य तौर पर पॉलीथिन प्लास्टिक का सर्वाधिक इस्तेमाल होता है। इसका उपयोग प्लास्टिक के बैग, खिलौने, शैंपू की बोतलें इत्यादि बनाने में होता है।

लोकप्रिय क्यों?

हमारी ज़िंदगी पर प्लास्टिक का गहरा असर है। अनेक प्लास्टिक तो हमारे घर के सदस्य जैसे हो गए हैं, जैसे नायलॉन, पॉलिस्टर, पॉलीथिन, टेफ्लॉन। बहुउपयोगी और सस्ता होने के कारण प्लास्टिक इतना लोकप्रिय हुआ है। प्लास्टिक कृत्रिम रूप से बनाया जाता है और विभिन्न प्रकार के उपयोग के लिए अलग-अलग गुणों वाले प्लास्टिक का कोई भी मिश्रण तैयार किया जा सकता है। हमारे पास कई तरह के प्लास्टिक उपलब्ध हैं - कठोर प्लास्टिक, कम वज़नी प्लास्टिक, पारदर्शी प्लास्टिक, ताप या बिजली का कुचालक इत्यादि। इन्हीं विशेषताओं के कारण प्लास्टिक बहुउपयोगी पदार्थ बन गया है। पैकेजिंग, भवन निर्माण, स्वास्थ्य-सुविधाओं, इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, कृषि, खेल सामग्री और वस्त्र उद्योग में इसका व्यापक इस्तेमाल होता है। आज प्लास्टिक बड़ी तेजी से सभी पारंपरिक पदार्थों जैसे जूट, कॉटन, चमड़ा, पेपर और रबर का स्थान लेता जा रहा है। अधिकांश प्लास्टिक पेट्रो रसायन खासकर तेल व प्राकृतिक गैस से बनाए जाते हैं, जो सस्ते होते हैं। प्लास्टिक उद्योग का काफी मशीनीकरण हो चुका है और उसमें मानव श्रम का इस्तेमाल कम से कम होता है। इस वजह से भी प्लास्टिक सस्ता पड़ता है।

प्लास्टिक की समस्याएं

इस चमत्कारिक पदार्थ के साथ अनेक समस्याएं भी

जुड़ी हुई हैं, खासकर इसके ज़हरीले प्रभाव और पर्यावरणीय खतरों को लेकर सर्वत्र चिंता जताई जा रही है।

ज़हरीले प्रभाव: विशुद्ध प्लास्टिक पानी में अघुलनशील और रासायनिक तौर पर अपेक्षाकृत निष्क्रिय होता है। इसलिए प्लास्टिक अपने शुद्ध रूप में कम ज़हरीला होता है। लेकिन हम विशुद्ध प्लास्टिक का बहुत कम इस्तेमाल करते हैं। मनचाहा प्लास्टिक हासिल करने के लिए उसमें विभिन्न तरह के ज़हरीले एडिटिव मिलाए जाते हैं। खाद्य पदार्थों, पानी इत्यादि के प्लास्टिक के संपर्क में आने से ये ज़हरीले रसायन उसमें से बाहर आ सकते हैं। पीवीसी को लचीला बनाने के लिए उसमें जो रसायन मिलाए जाते हैं, उनके बारे में पाया गया कि वे हार्मोनल प्रक्रियाओं में बाधा पहुंचाते हैं और इस तरह कैंसर की आशंका पैदा करते हैं। शिशुओं की दूध की पारदर्शी बोतल जिस पॉलीकार्बोनेट से बनाई जाती है, उसमें बिस्फेनॉल-ए (बीपीए) होता है, जो हार्मोन में गड़बड़ियों के लिए जाना जाता है। इससे कैंसर, इंसुलिन में बाधा, जलन और दिल की बीमारियां हो सकती हैं। कुछ एडिटिव आनुवंशिकी क्षति भी पहुंचा सकते हैं।

दैनिक जीवन में प्लास्टिक के लगातार बढ़ते इस्तेमाल के कारण ज़हर का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। भारत जैसे देश में सस्ता प्लास्टिक, खासकर गरीब तबकों के बीच, तेज़ी से पैठ बनाता जा रहा है। साथ ही इसके गलत इस्तेमाल से भी स्वास्थ्य सम्बंधी बड़े खतरे पैदा हो रहे हैं। जागरूकता की कमी और प्लास्टिक के निस्तारण की समुचित व्यवस्था नहीं होने के कारण कई बार प्लास्टिक को अन्य कूड़े-करकट के साथ जला दिया जाता है। प्लास्टिक को जलाने पर कार्बन मोनोऑक्साइड, डाइऑक्सीन और फ्यूरान जैसी ज़हरीली गैसों हवा में फैल जाती हैं। डाइऑक्सीन और फ्यूरान से कैंसर व श्वास-सम्बंधी समस्याएं हो सकती हैं। इस तरह ये गैसों काफी खतरनाक होती हैं।

पर्यावरणीय खतरे: पर्यावरण के लिए प्लास्टिक लगातार घातक साबित हो रहा है। अधिकांश कृत्रिम प्लास्टिक जीवाश्म ईंधन से बनाया जाता है। जिन तकनीकों का इस्तेमाल इसमें किया जाता है, उसमें ऊर्जा की बहुत अधिक खपत होती है। एक अनुमान के अनुसार दुनिया में उत्पादित कुल कच्चे

तेल में से 8 फीसदी का इस्तेमाल प्लास्टिक बनाने में किया जाता है। प्लास्टिक के निर्माण के दौरान भी बड़ी मात्रा में ज़हरीले रसायन उत्सर्जित होते हैं।

विश्व में प्लास्टिक की खपत करीब 20 करोड़ टन है और यह पांच फीसदी की सालाना दर से बढ़ रही है। हर साल दुनिया भर में प्लास्टिक की 500 अरब थैलियों का इस्तेमाल किया जाता है और अंत में वे कचरे के ढेर में फेंक दी जाती हैं। वे नालियों और ड्रेनेज सिस्टम को अवरुद्ध करती हैं। इसी का नतीजा होता है कि बारिश में अनेक शहरों में बाढ़ जैसे नज़ारे देखने को मिलते हैं।

प्लास्टिक का जैव-अपघटन नहीं होता और वह विघटन की प्राकृतिक प्रक्रिया का प्रतिरोधी होता है। इसलिए वह प्रकृति में हज़ारों-लाखों सालों तक ऐसे ही बना रहेगा। जब वह अपघटित होता भी है, तब अनेक ज़हरीले रसायन प्रकृति में छोड़ता है, जिससे हमारी ज़मीन, झीलें, नदियां प्रदूषित हो जाती हैं। यह ज़मीन के भीतर रिसकर भूमिगत पानी को भी खराब कर देता है।

समुद्र में पाई जाने वाली कम से कम 267 जीव प्रजातियों पर प्लास्टिक के कचरे का असर पड़ा है। प्लास्टिक अनेक पशुओं जैसे बकरियों, गायों, हिरणों की आंतों में भी पाया गया है और इस कारण वे बेमौत मारे भी जाते हैं। पानी में बहते, हवा में उड़ते और सूरज के ताप के असर से प्लास्टिक समय के साथ बहुत ही सूक्ष्म कणों में बंट जाते हैं। ये सूक्ष्म कण प्लवक और अन्य छोटे जीवों में पहुंच जाते हैं। इन्हें बड़े जीव निगल लेते हैं। ऐसे में निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि प्लास्टिक हमारी खाद्य श्रृंखला में शामिल होते जा रहे हैं जिसके बहुत ही घातक व दूरगामी परिणाम होंगे।

समस्या का समाधान

सबसे पहले तो हमें प्लास्टिक का अंधाधुंध इस्तेमाल बंद करना होगा। ऐसे कुछ क्षेत्र हैं, जहां प्लास्टिक वाकई बहुत ज़रूरी है। उदाहरण के लिए आधुनिक स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में जहां प्लास्टिक से डिस्पोज़ेबल सीरिंज, कैथेटर, कृत्रिम कॉर्निया, श्रवण यंत्र और कैप्सूल के आवरण बनाए

जाते हैं। इनके लिए ऐसा कोई वैकल्पिक पदार्थ नहीं है, जो प्लास्टिक जितना ही सस्ता और प्रभावी हो। लेकिन ऐसे कई क्षेत्र हैं, जहां प्लास्टिक के इस्तेमाल को काफी हद तक कम किया जा सकता है। कुल खपत का 35 फीसदी प्लास्टिक पैकेजिंग उद्योग में इस्तेमाल किया जाता है। इसे काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। शैंपू के सैशे (छोटे पैकेट), दाल, चावल, बिस्कुट और अन्य पदार्थों की खुदरा पैकेजिंग में प्लास्टिक का बहुत इस्तेमाल होता है। इसे पूरी तरह से टाला जा सकता है। इसके लिए हमें पारंपरिक पैकेजिंग सामग्री जैसे जूट, कपड़ा, कौटन इत्यादि को फिर से चलन में लाने की ज़रूरत है।

पौधों के अर्क से ऐसे प्लास्टिक के विकास पर काफी अनुसंधान किया जा रहा है, जो जैव-अपघटन योग्य हों। इस तरह के कुछ प्लास्टिक पहले से ही बाज़ार में उपलब्ध हैं। जैव-अपघटन योग्य प्लास्टिक मौजूदा कृत्रिम प्लास्टिक का अच्छा विकल्प हो सकता है, हालांकि अभी यह अपेक्षाकृत महंगा है। इसके अलावा प्लास्टिक का रिसाइक्लिंग भी एक विकल्प है। वर्तमान में हम हर साल जितना प्लास्टिक फेंक रहे हैं, उसका महज 10 फीसदी ही रिसाइकल हो पाता है। पेट्रो रसायनों के दामों में लगातार वृद्धि के चलते नए प्लास्टिक का उत्पादन महंगा से महंगा होता जाएगा। ऐसे में भविष्य में प्लास्टिक की रिसाइक्लिंग की बड़ी भूमिका होगी।

छटाई और प्रक्रियागत जटिलताओं के कारण भी प्लास्टिक की रिसाइक्लिंग काफी कम होती है। प्लास्टिक में मिलाए जाने वाले एडिटिव और अन्य पदार्थों के साथ उनके मिश्रण के तरीकों के कारण भी कई बार वे रिसाइक्लिंग के लायक नहीं रहते हैं। उदाहरण के लिए पेय पदार्थों, दूध और तेल की पैकेजिंग में इस्तेमाल होने वाले टेट्रापैक में पतली पॉलीथिन के साथ पेपरबोर्ड का उपयोग किया जाता है। इससे उसका रिसाइक्लिंग मुश्किल हो जाता है। इसके अलावा किसी प्लास्टिक को रिसाइकल करके उसी तरह का प्लास्टिक नहीं बनाया जा सकता। उदाहरण के लिए सॉफ्टड्रिंक की बोतल की प्लास्टिक को रिसाइकल करके प्लास्टिक की कुर्सियां ही बनाई जा सकती हैं, दुबारा बोतल

नहीं बनाई जा सकती। और इससे भी बदतर, रिसाइकल किए गए प्लास्टिक से जो उत्पाद बनाए जाते हैं, उन्हें फिर से रिसाइकल नहीं किया जा सकता।

ऐसे में सबसे महत्वपूर्ण समाधान तो अपनी जीवन शैली में बदलाव लाना ही है। हमें प्लास्टिक का कम से कम इस्तेमाल करना चाहिए, वहीं करना चाहिए जहां वाकई इसके बगैर काम नहीं चल सकता। अगर हमारे पदार्थ कम दूरी तय करेंगे तो उनकी पैकेजिंग की ज़रूरत भी कम होगी। ऐसे में हमें स्थानीय स्तर पर उत्पन्न मौसमी पदार्थों का ही अधिक से अधिक उपभोग करना चाहिए, जिनके लिए पैकेजिंग की आवश्यकता कम रहेगी।

विश्व स्तर पर प्रति व्यक्ति प्लास्टिक की खपत 26 किलोग्राम सालाना है। प्रति व्यक्ति प्लास्टिक की खपत का सीधा सम्बंध प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय से है। जो देश जितना अधिक संपन्न है, वहां प्लास्टिक की खपत भी उतनी अधिक होती है। प्रति व्यक्ति प्लास्टिक की खपत उत्तरी अमरीका में 90 किलो, पश्चिमी युरोप में 65 किलो, चीन में 12 किलो और भारत में 5 किलो है। लेकिन भारत के संदर्भ में बुरी खबर यह है कि यहां खपत 15 फीसदी की दर से बढ़ रही है और वर्ष 2012 के अंत तक प्रति व्यक्ति खपत 10 किलो तक पहुंचने की संभावना है। इसलिए हमें प्लास्टिक के कम से कम इस्तेमाल और एक ही प्लास्टिक के दुबारा इस्तेमाल की ओर बढ़ना होगा।

आज ही करें शुरुआत

हम सभी व्यक्तिगत स्तर पर भी प्लास्टिक का विवेकपूर्ण इस्तेमाल करने की दिशा में प्रयास कर सकते हैं। सबसे पहले हम इस बात पर विचार करें कि अपने दैनिक जीवन में प्लास्टिक का कितना उपयोग करते हैं। क्लास रूम, स्कूल और घर में झांकें और चिन्हित करें कि कितनी चीज़ें प्लास्टिक से बनी हैं। इनमें से कितनी चीज़ें हमारे भोजन या पेय पदार्थों से सीधे संपर्क में आती हैं? सोचें कि पिछली बार आपने बिस्कुट के जिस पैकेट को खोला था, उसके रैपर का क्या किया? पिछले माह आपके परिवार ने कितने पॉलीथिन बैग्स का इस्तेमाल किया? पिछली यात्रा के दौरान

आपने पानी की कितनी बोतलें खरीदी? उन खाली बोतलों का क्या किया? आप जिस गद्दे पर सोते हैं, वह किससे बनी है? आप जो कपड़े पहनते हैं, वे किस पदार्थ से बने हैं? क्या आप भोजन गर्म करने के लिए किसी प्लास्टिक के बर्तन का इस्तेमाल करते हैं?

शहरी जल-मल निकासी प्रबंधन में पॉलीथिन की थैलियां सबसे बड़ी चुनौती बन गई हैं। इनका उपयोग अक्सर अनावश्यक होता है और इनसे काफी हद तक बचा जा सकता है। कई राज्यों और शहरों में 40 माइक्रॉन से कम मोटाई वाली थैलियों के इस्तेमाल पर रोक लगी हुई है। चालीस माइक्रॉन से कम मोटाई वाली थैलियों को रिसाइकल नहीं किया जा सकता और ये जल निकासी की नालियों को अवरुद्ध कर देती हैं। चालीस माइक्रॉन से अधिक मोटाई वाली थैलियों को रिसाइकल तो किया जा सकता है, लेकिन फिर भी उनका उपयोग कम से कम किया जाना चाहिए। किराने का सामान और सब्जियों की खरीददारी के लिए कपड़े या कागज़ की थैलियों के इस्तेमाल से हम पॉलीथिन बैग का उपयोग कम कर सकते हैं। पैकेज में आने वाले पेय पदार्थों और पेयजल से बचना चाहिए। तैयार खाद्य-पदार्थों के लिए प्लास्टिक पैकेजिंग अनिवार्य होती है। इसलिए इनसे भी बचा जाना चाहिए। सिंथेटिक फाइबर से बने कपड़ों के बजाय सूती या रेशम से बने वस्त्र ही पहनने चाहिए। किसी भी समारोह, उत्सव या रेलगाड़ी इत्यादि में यूज़-एंड-थ्रो प्लास्टिक या स्टाइरोफोम कप, गिलास या प्लेट का इस्तेमाल करने से सदैव इंकार करें। प्लास्टिक सम्बंधी कुछ मुख्य टिप्स

1. फल-सब्जियां और मांस सदैव ताज़ा ही खरीदें, ताकि उन्हें प्लास्टिक के रैपर में लपेटकर रखने की ज़रूरत न पड़े। ज़रूरत

पड़ने पर स्टील या कांच के ही बर्तन में रखें।

2. जब भी बाहर निकलें, कपड़े का झोला या बार-बार इस्तेमाल करने लायक प्लास्टिक बैग लेकर ही जाएं।

3. कचरे के डिब्बे में पॉलीथिन के बजाय अखबार का कागज़ बिछाकर रखें।

4. प्लास्टिक के सामान का हमेशा दुबारा इस्तेमाल करने की संभावना बनाए रखें। उदाहरण के लिए मिठाइयों के प्लास्टिक के डिब्बे को धोकर उसका इस्तेमाल बाद की खरीदी में किया जा सकता है।

5. प्लास्टिक के बर्तन में कभी भी कोई भोज्य पदार्थ गर्म न करें, भले ही उस पर लिखा हो कि यह गर्म करने के दौरान भी सुरक्षित है। गर्म पेय पदार्थ या दूध को प्लास्टिक के गिलास में लेकर न पिएं।

6. अचार, तेल, शर्बत और मिठाइयों को लंबे समय के लिए प्लास्टिक के बर्तनों में न रखें।

7. कॉटन, जूट या चमड़े जैसे प्राकृतिक पदार्थों से बने कपड़ों, गद्दों और जूतों का ही इस्तेमाल करें।

इस तरह कहा जा सकता है कि प्लास्टिक हमारे पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा है और हमारी सेहत पर इसका काफी नकारात्मक असर पड़ा है। प्लास्टिक से मुक्त दुनिया बनाने की दिशा में काम करने की महती ज़रूरत है। इसके विवेकपूर्ण इस्तेमाल से हम इसकी खपत को 10 से 30 फीसदी तक कम कर सकते हैं। दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति और हमारी जीवन-शैली में बदलाव से हम दीर्घावधि में

इसके इस्तेमाल में और भी कमी कर सकते हैं। आइए, हम इस नज़रिए के साथ शुरुआत करें कि अधिकांश मौकों पर प्लास्टिक के इस्तेमाल की कोई ज़रूरत नहीं है। एक बेहतर कल के लिए हम बेहतर आदत डालें।
(स्रोत फीचर्स)

